डी.एन.ए. विश्लेषण और प्राचीन व्यापार

हाल ही में एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ है जिससे पुरातत्व के क्षेत्र में एक नई विधि का संकेत मिलता है। *जर्नल ऑफ ऑर्कियोलॉजिकल साइन्स* में प्रकाशित इस शोध पत्र में बताया गया है कि कैसे डी.एन.ए. विश्लेषण की मदद से प्राचीन सभ्यताओं के व्यापार के बारे में जानकारी मिल सकती है।

पुरातत्ववेत्ता यह तो जानते थे कि प्राचीन युरोपीय सभ्यताएं भूमध्य सागर के ज़रिए कई चीज़ों का व्यापार करती थीं। मगर इस बात का कोई अंदाज़ न था कि यह व्यापार किन चीज़ों का होता था। इसका एक कारण यह है कि पुरातत्ववेत्ताओं को जो सामग्री मिलती है उसमें वे खोके होते हैं जिनमें भरकर चीज़ों का व्यापार होता था। अब खोके देखकर आप कितनी दूर तक जा सकते हैं? लिफाफा देखकर खत का मजमून भांपने की भी एक हद है।

मगर स्वीडन के लुंड विश्वविद्यालय के ब्रेंडन फोली और मारिया हैन्सन ने इन खोकों का अध्ययन एक नए तरीके से करने का विचार बनाया। इन लोगों ने 2400 वर्ष पूर्व डूबे एक जहाज़ के मलबे में से ऐसे खोके प्राप्त किए। इन खोकों को *एम्फोरा* कहते हैं। फोली और हैन्सन ने इन *एम्फोरा* की अंदरूनी परत से कुछ खुरचन ले ली। इस खुरचन में से उन्हें डी.एन.ए. की सूक्ष्म मात्रा प्राप्त हुई। इतनी सूक्ष्म मात्रा का अध्ययन असंभव होता है। अतः उन्होंने पोलीमरेज़ ृंखला क्रिया द्वारा डी.एन.ए. की प्रतिलिपियां बनाई और उनका विश्लेषण किया और अपने आंकड़ों की तुलना जीन बैंक के डी.एन.ए. डैटाबेस में उपलब्ध आधुनिक डी.एन.ए. आंकड़ों से की।

पुरातत्ववेत्ता आम तौर पर मानते थे कि उक्त एम्फोरा में शराब का परिवहन ही होता होगा। मगर डी.एन.ए. विश्लेषण से पता चला कि इनमें जैतून, थाइम और ओरेगानो (तीनों वनस्पतियां) के अंश थे। इसके आधार पर फोली और हैन्सन का निष्कर्ष है कि एम्फोरा में जैतून का तेल भी भेजा जाता था और इसमें वनस्पति सुगंध मिलाई जाती थी।

इस शोध के परिणामों को देखते हुए पुरातत्ववेत्ताओं को लग रहा है कि डी.एन.ए. विश्लेषण से प्राचीन अर्थ व्यवस्थाओं के बारे में नई जानकारी हासिल हो सकती है। अब फोली और हैन्सन अन्य पुरातात्विक सामग्री पर इसी तरह के अध्ययन की योजना बना रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***